© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

जैन ग्रन्थों में कृष्ण का स्वरूप

डॉ0 रत्नेश कुमार
1एन/10ए, तिलक नगर, अल्लापुर
इलाहाबाद

जैन ग्रन्थों क अनुसार कृष्ण न भगवान के अवतार है और न ही स्वयं भगवान हैं। जैन ग्रन्थों की अपनी एक भिन्न अवधारणा है। इस अवधारणा के अनुसार लोक में विशिष्ट अतिशयों से सम्पन्न पुरुष काल–क्रम से जन्म लते रहते हैं। इन्ही पुरुषों को जैन ग्रन्थों में शलाका–पुरुष कहा जाता है। परम्परानुसार एक काल–खण्ड में तिरसठ शलाका–पुरुष जन्म लेते हैं। जिसमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ वासुदेव तथा नौ प्रतिवासुदेव है।[1] जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों के अतिरिक्त कृष्ण बलराम तथा जरासन्ध आदि चक्रवर्ती शलाका पुरुषों में हैं। तिरसठ शलाका पुरुषों की गणना में कृष्ण नवम वासुदेव हैं। कृष्ण का प्रतिद्वन्द्वी जरासंध नवम प्रति वासुदेव है तथा बलराम नवम बलभद्र हैं।

जैन धारणानुसार कृष्ण की वासुदेव संज्ञा श्रेष्ठ राजपुरुष के रूप की द्योतक थी। परम्परानुसार वासुदेव अर्द्ध चक्रवर्ती राजा होता है। जितने शक्तिशाली व प्रभाव सम्पन्न राजा कृष्ण थे लगभग वही स्थिति जरासंध की भी थी। जैन पौराणिक कृतियों में कृष्ण जरासंध का संहार करते हैं, जिसके फलस्वरूप 'वासुदेव राजा' के रूप में उनका अभिनन्दन किया जाता है। आचार्य जितसेन अपने 'हरिवंश पुराण' में इस तथ्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

'अत्रान्तर सुरैस्तुष्टस्तस्मिन्नुद्धुष्टबम्मरे।
नवमा वासुदेवोऽभूद्वसुदेवस्य नन्दनः।।
निहतश्च जरासन्धस्तच्चक्रेणैव संयुग।
प्रतिशत्रुर्गुणद्वेषी वासुदवन चक्रिणा।।[2]

जैन साहित्य में उपलब्ध कृष्ण कथा में कृष्ण–जरासंघ संघर्ष की स्थिति श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में आये कृष्ण–पौण्ड्रक संघर्ष जैसी ही है। जैन साहित्य में कृष्ण–जरासंध संघर्ष की कथा इस प्रकार आयी है, जब जरासंध को कृष्ण व यादवों की शक्ति व प्रभाव की जानकारी मिली तो उसने दूत भेजकर यह संदेश कहा– 'कि या तो मेरी आधीनता स्वीकार करो या युद्ध भूमि में मेरा सामना करने को तैयार हो जाओ।' इस संदेश के उत्तर में कृष्ण यादवगण की सेना लेकर जरासंध से युद्ध करने के लिए चल पड़े। युद्ध भूमि में दोनों महान राजाओं में जो संघर्ष हुआ उसमें कृष्ण ने जरासंध का वध किया और वे विजयी हुए। विजयी होने पर 'वासुदेव' रूप से देवताओं ने उनका अभिनन्दन किया।

जैन ग्रन्थों में कृष्ण वासुदेव के सम्बन्ध में एक और विशिष्ट तथ्य का वर्णन है। वह यह है कि कृष्ण बाइसहवें तीर्थंकर अर्हत अरिष्टनेमि क न केवल समकालीन थे, अपितु उनके चचेरे भाई भी थे। आगमिक कृतियों में ऐसे अनेक प्रसंगों का वर्णन है जब अर्हत अरिष्टनेमि द्वारिका जाते तब कृष्ण उनके उपदेश श्रवण का जाते।[3]

अरिष्टनेमि और कृष्ण वासुदेव का जो परिवारिक वंश–वृक्ष जैन–परम्परा में उपलब्ध है, वह इस प्रकार है–

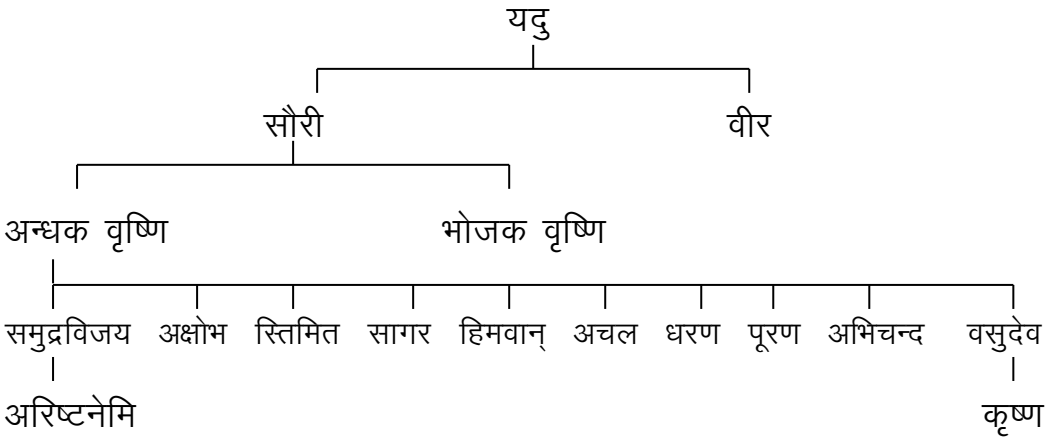

उक्त वंशानुक्रम यदुवंशी राजा अन्धक के दस पुत्र थे। जिनमें सबसे बड़े समुद्र विजय के पुत्र अरिष्टनेमि थे तथा सबसे छोटे वसुदेव के पुत्र कृष्ण थे।[4]

जैन कृतियों में उपलब्ध वर्णन के अनुसार कृष्ण आयु में अरिष्टनेमि से बड़े थे।[5]

आगमिक कृतियों में कृष्ण चरित किसी क्रमबद्ध रूप में उपलब्ध नहीं है।

कृष्ण चरित सम्बन्धी आगमिक कृतियां :

1. समावायांगसूत्र– इसके 207 वें सूत्र में बलदेव तथा वासुदेव का वर्णन है। वासुदेव के रूप में कृष्ण की विशेषताओं उनके व्यक्तित्व, चारित्रिक गुण, लक्षण, उनका वेश, अस्त्र–शस्त्र, ध्वज आदि का विवरण इस सूत्र में दिया गया है।

2. ज्ञातृधर्म–कथा– यह छठा अंग ग्रन्थ है। इससे दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध के सोलहवें अध्ययन में द्रौपदी–चरित का वर्णन है। इस प्रसंग में कृष्ण वासुदेव का श्रेष्ठ राजपुरूष के रूप में वर्णन हुआ है। सूत्र 29 में पाण्डवों द्वारा कृष्ण को स्वामी सम्बोधन किया गया है। अद्धचक्रवर्ती वासुदेव राजा के रूप में कृष्ण का वर्णन इस सूत्र में विस्तार पूर्वक निरूपित है। दूसरे श्रुतस्कन्ध में द्वारिका के श्रेष्ठ वासुदेव राजा का वर्णन है, उनके परिवार, रानियों, पुत्रादिकों का नामोल्लेख पूर्वक वर्णन हुआ है। अरिष्टनेमि का द्वारिका आगमन तथा कृष्ण का उनकी सभा में जाने का वर्णन है।

3. अन्तकृद्दशा– यह आठवाँ अंग ग्रन्थ है। इसके वर्ग 1,2,3,4,5, में कृष्ण वासुदेव तथा उनकी रानियों, पुत्रों आदि का वर्णन है।

4. प्रश्न व्याकरण– यह दशम अंग ग्रंथ है। इसकी विषय वस्तु का विभाजन दो द्वारो (आस्रव तथा संवट) में हुआ है। आस्रव द्वार के चतुर्थ अध्ययन में कृष्ण चरित्र का वर्णन है। सूत्र में कृष्ण को चाणूर मल्ल, रिष्ट बैल तथा कालिय नामक महान विषैले सर्प का हन्ता कहा गया है। यमलार्जुन को मारने वाले, महाशकुनि एवं पूतना के रिपु, कंस का मर्दन करने वाले तथा राजगृह के अधिपति, वीर राजा जरासन्ध को नष्ट करने वाले के रूप में कृष्ण का उल्लेख है।

5. निरयावलिका– इसमें पाँच वर्ग है। पाचवाँ वर्ग वृष्णिदशा वर्ग है। इसमें भी द्वारिका नगरी के वर्णन में राजा कृष्ण वासुदेव के माहात्म्य का वर्णन है। आगमेतर साहित्य में कृष्ण चरित का वर्णन करने वाली कृतियों में गुणभद्राचार्य कृत 'महापुराण' तथा हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिषष्टि–शलाका', 'पुरुष–चरित' आदि विशालकाय काव्य कृतियाँ हैं। इन्ही में हरिवंश पुराण (जिन सेन कृत) संज्ञक कृतियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

आगमेतर साहित्य में जिन सेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण एक ऐसी प्रथम कृति है। जिसमें कृष्ण के सम्पूर्ण जीवन चरित का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में वर्णित है।

कृष्णचरित का वर्णन ग्रन्थ के निम्न सर्गों में इस प्रकार हुआ– कृष्ण जन्म, बालक्रीड़ा, कृष्ण के लोकोत्तर पराक्रम का वर्णन (सर्ग 35)। कंस द्वारा कृष्ण को मारने के प्रयत्न, मथुरा में मल्ल युद्ध, कृष्ण द्वारा कंस वध, सत्यभामा से विवाह, जरासंध के भाई अपराजित का वध (सर्ग 36)। जरासंध के आक्रमण के कारण यादवों का मथुरा से प्रस्थान। द्वारिका का निर्माण तथा द्वारिका प्रवेश (सर्ग 41)। कृष्ण द्वारा रुक्मिणी–हरण व विवाह शिशुपाल–वध (सर्ग 42)। प्रद्युम्न का जन्म तथा हरण (43)। कृष्ण का जाम्बवती, लक्ष्मणा, सुसीमा, गौरी, पद्मावती और गान्धारी के साथ विवाह (सर्ग 44), प्रद्युम्न का द्वारिका लौटना (सर्ग 47) कृष्ण के पुत्रों का वर्णन (सर्ग 48), कृष्ण–जरासन्ध युद्ध तथा कृष्ण द्वारा जरासंध का वध (सर्ग 50), जरासंध वध के फलस्वरूप नारायण (वासुदेव) रूप में कृष्ण को प्रसिद्धि तथा अनेक राजाओं, विद्याधरों द्वारा कृष्ण का अभिनन्दन (सर्ग 53), द्रौपदी हरण, कृष्ण द्वारा राजा पद्मनाभ को दण्डित कर द्रौपदी को वापस लाना। कृष्ण का पाण्डवों पर कुपित होना तथा उन्हें हस्तिनापुर से निर्वासित करना पाण्डवों का दक्षिण समुद्रतट जाकर मथुरा नगरी बसाकर रहना (सर्ग 54) तथा द्वारिका दहन का वर्णन (सर्ग 61) तथा कृष्ण का परमधामगमन (सर्ग 62) में वर्णन है।

कवि सधारू रचित 'प्रद्युम्न चरित' में सत्यभामा को कृष्ण की पटरानी कहा गया है। एक बार नारद का द्वारिका आगमन हुआ लेकिन सत्यभामा के द्वारा उनका उचित अतिथि सत्कार न होने कारण कुपित होकर बदला लेने की भावना से किसी दूसरी कन्या (भीष्म की कन्या रुक्मिणी) से कृष्ण का प्रेम सम्बन्ध करवाया।

इसके अतिरिक्त जैन ग्रन्थकार कृष्ण को नेमिनाथ के समकालीन महापुरुष मानते है परन्तु वूलर महोदय के मतानुसार जैन धर्म के बहुत पहले ही इस धर्म का उदय हो चुका था।

जैन साहित्य में कृष्ण कथा उत्तरोत्तर विकार को ही प्राप्त हुई है 'वृहत्कथा कोश' में 'वासुदेव की कथा' नाम से कोशकार ने कृष्ण की ओर संकेत करने का प्रयास किया है। इसकी एक कथा में रोहिणी का वसुदेव की पत्नी के रूप में उल्लेख मिलता है।

आन्नद रामायण में कृष्ण के परम्परागत वर्णन के साथ यहाँ पर यह विशेषता रही है कि कृष्ण के अनेक विवाहों का सम्बन्ध उनके पूर्व जन्म की घटनाओं के साथ स्थापित किया गया है। श्रीकृष्ण का जिन युवतियों से विवाह हुआ था। उन्हें वे राम के रूप में त्रेता युग में ही पत्नी बनाने का आश्वासन दे चुके थे। इस प्रकार आन्नद रामायण की मुख्य स्थापना यही रही है कि राम ने दूसरा अवतार कृष्ण के रूप में लिया।

संदर्भ :

1. त्रिषष्टि–शलाका, पुरुष–चरित्र', हेमचन्द्राचार्य
2. हरिवंश पुराण, सर्ग–53, श्लोक– 17–18
3. ज्ञातृधर्म कथा, द्वितीय श्रुतस्कन्ध
4. ज्ञातृधर्म कथा, द्वितीय श्रुतस्कन्ध
5. ज्ञातृधर्म कथा, द्वितीय श्रुतस्कन्ध।